classmate
Date 30/1/15
Page

मुझे पवई इंग्लीश स्कुल में
सत्कार के लिए बुलाया गया।
दि. 24/01/15 को दोपहर 3.30 बजे.
डाब में गई तो पुरा हॉल लेडीज
और बच्चों से भरा हुआ था
मुझे भगा डगा नही मिलेगी बैठने के
लिए। मगर मैडम ने आगे बुलाया
वहाँ दो चेअर खाली रखी थी।
वहाँ हमे बिठाया डाब प्रोग्राम शुरु
हुआ। तो मेरा नाम अनांस किया
और कहाँ आप स्टेजपर आकर
बैठीये। तब थोडा घबराहट हुई और
अच्छा भी लग रहा था।
मेरा नाम लेकर मेरी तारीफ की
मैने अपने बारेमें थोडा लिखकर
दिया था तो प्रिन्सीपल मैडम ने
सबको बोला। और कहाँ की सारिका
अपनी कहानी खुद सुनायेगी।
मैं एक छोटेसे गाँव से
आयी हुँ तब मेरे गाँव में सडक
नहीथी। कोई वाहन नही था स्कुल
सिर्फ 8वी कक्षा तक ही था तो हमें
दुसरे शहर में जाना पडता था।
लाईट नही थी। केरोसीन का दिया
लगाकर हम पढाई करते थे। स्कुल
6 किलो मीटर लंबा था तो रोज पैदल
चलके स्कुल जाते थे, बैग नही था
हात में पुरी किताबे रहती थी।

और बारिश मे एक छाता दो जन
मैं और मेरा भाई दोनों शेअर करते
थे।

ये सब बताते समय खुशी तो
नही बोल सकती क्योंकी ये सब
झेला है मैंने 6 महीने चप्पल नही थी
पैरों में। शनिवार को 2:30 बजे स्कुल
छुटता था तो बहोत पैर जलते थे
पत्थर कांटे सब रास्ते मे था। मगर
मैं और मेरा भाई रोज स्कुल जाते थे
एक दीन भी खाडा नही करते थे।
जिंदगी में पढना बहोत जरूरी
है। मेरी शादी होने के कारण मैं
नही पढ पायी।

फिर मैं मुंबई आयी बच्चे
होगये। कुछ करना था। ऐसे ही मरना
नही चाहती थी। मॉनटेसरी कोर्स
करके बालवाडी लेने लगी फिर
बुनियाद के मॅडम से पहचान हुई
उन्होने बहोत सपोर्ट किया
इंग्लिश नही आता था उन्होने
इंग्लिश बोलना, समझना, पढना सिखाया
और मुझे बुनियाद में शामिल करके
मेरी जिंदगी पलट दी. मैं आज जो
कुछ भी हूँ बस सिर्फ और सिर्फ
बुनियाद की वजह से

थँक्स
Smatode